ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 591-593

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

डॉ0 मदन डागा के काव्य में भाषा–चेतना

डॉ0 राजेन्द प्रसाद खीचड़

सहायक आचार्य– हिन्दी विभाग, राजकीय डूँगर महाविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान), भारत

Received- 07.08.2020,Revised- 09.08.2020, Accepted-10.08.2020 E-mail: - rajendralecturer@gmail.com

सारांश : ***डॉ. मदन डागा ने भावों को रूपाकार देने के लिए विभिन्न प्रकार के भाषिक प्रयोग किये हैं। उनकी कविता में लोकोक्तियाँ, मुहावरे और कहावतें नये–नये रूप में उपस्थित हैं। इस प्रकार प्रतीक, उपमान और मुहावरों के सम्बन्ध में उनके द्वारा किये गये नवीन प्रयोग पूर्ण रूप से सफल हैं तथा अपने उद्देश्य को उद्घाटित करने मे सक्षम हैं। इस प्रसंग में उनके द्वारा प्रयोग किये गये विभिन्न भाषाओं के शब्द भी उनकी भाषा की एक विशेषता बन जाते हैं। अपनी संवेदनाओं और अनुभूतियों को सजीव रूप से चित्रित करना डॉ. मदन डागा की विशेषता रही है, जो पाठक को स्पष्ट रूप से निर्देशत करने में कारगर सिद्ध हुई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि डॉ0 मदन डागा बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे और भावों के कुशल चितेरे थे। अपनी तुलिका के माध्यम से उन्होंनें ऐसा काव्य सर्जन किया कि वह उच्च कोटि के विद्धानों से लेकर निम्न वर्ग तक के लिए पठनीय और ग्राह्य है। डॉ0 डागा का समस्त काव्य वस्तु और रूप दोनों दृष्टियों से अपने युग से जुड़ा है और यह जुड़ाव अपने साथ पुर्ण चेतनता लिये हुऐ है।***

कुंजीभूत शब्द– भावाभिव्यक्ति, संम्प्रेषित, सुष्ठता, अभिव्यंजना, वैधानिक,आत्मचिंतन, विशिष्ट, पारम्परिक।

भाषा अपने आप में भावाभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है, कह सकते हैं कि अपनी आन्तरिक अनुभूतियों के प्रत्यक्षीकरण की कुल सफलता भाषा पर निर्भर है। भाषा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने विचारों व भावों को दूसरे प्राणी तक सम्प्रेषित करते हैं। एक साधारण मनुष्य की भाषा में और सहित्यकार की भाषा में अन्तर होता है। वैसे तो साधारण मनुष्य भी अपने अनुभवों को व्यक्त करते समय भाषा को प्रभावशाली बनाने का प्रयत्न करता है परन्तु इस प्रयास में पूर्णरूपेण सफलता सहित्यकार को ही मिलती है। सहित्यकार की भाषा प्रभावशाली तभी बन सकती है जब उसमें सम्प्रेषणीयता, सुष्ठता, धारदार प्रवाह और सहजता के गुण मौजूद हों। साहित्य अपनी सम्पूर्णता में भाषा–कला का प्रदर्शन होता है। अतः जब कोई रचनाकार अपनी संवेदना, विचार और अनुभूतियों को लेकर नई सृष्टि की ओर अग्रसर होता है तो उसे रचना को रूपाकार देने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। अपनी रचना को मूर्त रूप देने के प्रयास में रचनाकार जिस अभिव्यंजना कौशल का प्रयोग करता है उसे भाषा–विधान की संज्ञा से अभिहित किया जाता है।

भाषा–चेतना की दृष्टि से डॉ. मदन डागा की कविताओं में भाषा के वैधानिक अंगों का खूबसूरती से प्रयोग हुआ है। इस दृष्टि से यदि डॉ. मदन डागा के भाषा–शिल्प पर दृष्टिपात करें तो हम पाते हैं कि वे हिन्दी के प्रगतिशील युग के जुझारु तेवर वाली पीढ़ी के प्रतिनिधि कवि थे। उनका जीवन संघर्षशीलता और कटु अनुभवों से भरा पड़ा है, और इन्ही कटु अनुभवों को उन्होंनें शब्दों के रूप में हथियार की तरह इस्तेमाल किया है। उन्होंनें पुरानी परम्परा से चले आ रहे शिल्पगत विधान और भाषा के पाण्डित्यपूर्ण प्रदर्शन को नकारते हुए अपनी संवेदना को सीधे और सरल शब्दों में अभिव्यक्त किया है। जिससे उनकी बातें फुटपाथी लोगों के ह्रदय को भी आसानी से छू सकने में सक्षम है। अपनी भाषा की इस मौलिक विशेषता को डागाजी ने इस तरह रूपायित किया है–

"मेरी भाषा का व्याकरण पाणिनि नहीं
पद दलित ही जानते हैं।
क्योंकि वे ही मेरे दर्द को पहचानते हैं।
मेरी कविता का कमल बगीचे के जलाशयों में नहीं
स्लम्स के कीचड़ में खिलेगा
मेरी कविता का अर्थ उत्तर पुस्तिका में नहीं
फुटपाथों पर मिलेगा।"[1]

डॉ. डागा की कविताओं की भाषा का प्रधान स्वर है– स्पष्टवादिता। उन्होंनें अपने समय की सामाजिक व राजनैतिक विकृतियों को बड़े ही धारदार और पैनी भाषा में रेखांकित किया है। भाषा का यह पैनापन अपने उद्देश्य को साथ लेकर चलते हुए पाठक के मानस पटल पर सीधा वार करता है, जिससे पाठक, विषयों पर आत्मचिंतन करने के लिए मजबूर हो जाता है। यहाँ कवि के व्यक्तित्व और उसकी भाषा में अद्भुत सामंजस्य भी दिखाई पड़ता है। डॉ. डागा को अपनी भाषा के इस खुरदरेपन व अक्खड़पन के कारण ही आग की भाषा का कवि कहा जाता है। इस संन्दर्भ में डॉ. प्रकाश आतुर के शब्द उल्लेखनीय हैं– "उनकी कविता में शिल्प, शैली की बनावट का चाहे सौंन्दर्य न हो लेकिन एक ऐसा खुरदरापन है जो पुरुषोचित है और जो सिर्फ संघर्ष से गुजरकर ही हासिल किया जा सकता है। उनकी कविता कमल या गुलाब नहीं, फौलाद है, दहकता अंगार है। वे जुझारु तेवर के कवि

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

थे और आग की भाषा में अपनी बात कहने के अभ्यस्त हो गये थे। वे शब्द के हथियार से असमानता के खिलाफ संकल्पित थे। उनका वामपंथी रूझान बतौर फैशन के नहीं था बल्कि सर्जनात्मक अभिव्यक्ति की निहायत जरूरी बात थी।"[2] डॉ. डागा की इसी प्रकार की भाषा से युक्त एक कविता यहाँ दृष्टव्य है–

"कुते मनुष्यों के पांवों को चाट सकते हैं,
लेकिन कुछ मनुष्य कुर्सी के तलवे भी चाट सकते हैं
और वे जो कुर्सी के तलवे चाट सकते हैं
वे किसी के भी पांव चाट सकते हैं
और स्वार्थवश काट भी सकते हैं।"[3]

साहित्य सर्जन के विभिन्न उद्देश्यों में से एक है अपनी काव्य प्रतिभा के द्वारा सामाजिक असमानताओं को मानव समाज में उजागर करना, और यही डागाजी की कविताओं का प्रमुख उद्देश्य है। वे कविता की कलात्मकता को अनावश्यक मानते हैं। उनकी कविता का दायित्व दरअसल शोषकों के प्रति घृणा उत्पन्न करना है, इसलिए भाषा–शास्त्र की विलक्षणताओं में न जाते हुए वे उसकी शस्त्र–शक्ति को ज्यादा अहिमयत देते हैं–

"किन्तु नफरत में शस्त्र बन जाती है।
विचार समझने नहीं
सिर फोड़ने के काम आती है
भाषा शास्त्र बकवास है
भाषा शास्त्र में सत्य का वास है।"[4]

इनके काव्य की भाषा की एक और अत्यन्त विशिष्टता यह है कि इन्होंनें अपनी कविताओं में अंग्रेजी व अन्य भाषाओं के शब्दों का भी खूब प्रयोग किया है, परन्तु अंग्रेजी के इस प्रकार के शब्द उनकी कविता में नहीं आये जिनका अर्थ देखने के लिए शब्दकोश की आवश्यकता पड़े, बल्कि आम बोलचाल की भाषा में समाहित हो चुके वे शब्द आयें हैं जो लम्बे समय से प्रयोग किये जाने के कारण हिन्दी भाषा के ही शब्द जान पड़ते हैं। अंग्रेजी शब्दों के इस तरह के प्रयोगों को देखकर हितेश व्यास ने लिखा है– "भाषा के मामले में कवि इतना आजाद है कि उसने धड़ल्ले से अंग्रेजी शब्दों का इस्तेमाल किया है। कवि के मन में भाषा के किसी विशिष्ट स्वरूप या शुद्धता के प्रति मोह नहीं है। कवि का लक्ष्य है संप्रेषण, जिसे सक्षम और पूर्ण बनाने के लिए वह भाषा के साथ खेलने की हद तक लीला भाव रखता है। आज की कविता में अंग्रेजी शब्दों का आ जाना कोई उल्लेखनीय बात नहीं है। बहु प्रचलित अंग्रेजी शब्द स्वाभाविक रूप से आ जाते हैं किन्तु मदन डागा की कविता में सचेष्ट रूप से अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग हुआ है। कवि को लगता है की उनके हिन्दी पर्याय से कविता का प्रभाव कम हो जायेगा। ये अंग्रेजी शब्द मदन डागा की कविता की एक पहचान बन गये हैं।"[5] डागा जी द्वारा प्रयोग किये गये अंग्रेजी व उर्दू के शब्दों से युक्त कविता के उदाहरण दृष्टव्य हैं–

"शरद पूनो के बहाने, रजत स्प्रे हो गया
भू पर अमिट, कि जैसे वित्त मंत्री ने
नये कानून द्वारा आज कर दी
ब्लैक मनी व्हाइट"[6]

एक और उदाहरण–

"क्योंकि तुम तमाम उम्र महाबदौलत की सदारत में गोष्ठियों में तरन्नुम से गाते रहोग, और मुस्काराते रहोगे
तलियाँ पिटवाते रहोगे
क्योंकि तुम गाते रहोगे दर्द के गीत, गम की गजलें सुनाते राहोगे शेर महाबदौलत के सामने मिमियाते।"[7]

डॉ. डागा की रचनाओं की भाषा मंच और श्रोताओं के उपयुक्त है। उसमें अंग्रेजी और उर्दू के प्रचलित शब्दों का प्रयोग करके भाषा को प्रभावी बना दिया गया है। ऐसा नहीं कि अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग से कविता की भाषा ने अनावश्यक कलिष्टता का गुण धारण कर लिया है, बल्कि आम बोलचाल की भाषा के अंग्रेजी शब्द लेने से वह और भी सरल बन गई है। डॉ. डागा की भाषा में सहजता के साथ अंग्रेजी शब्दों का आगमन उनकी भाषागत युग–चेतना के कारण हुआ है। क्योंकि अंग्रेजी आधुनिक युग के भारतीय समाज में घुल मिल गई है।

डॉ. डागा ने भाषा में कौशलपूर्ण प्रवाह और उसमें प्रभावात्मकता उत्पन्न करने के लिए अनेक तरह की पारम्परिक लोकोक्तियों, मुहावरों और कहावतों का बखूबी प्रयोग किया है। उनकी कविता की यह प्रमुख विशेषता है कि वे अपनी बात को पाठक तक पहुँचाने के लिए विषय के अनुरूप मुहावरे कविता में इस कदर जड़ देते हैं कि वह पढ़ने वाले के ह्रदय को सहज ही छू लेते हैं, यथा–'सठिया जाना' हिन्दी में एक बड़ा प्रचलित मुहावरा है। हिन्दी भाषा भाषी लोग सठियाये हुए का अर्थ खूब अच्छी तरह से समझते हैं। उसी का मर्म समझाते हुए उन्होंनें लिखा है कि 'लोग कुर्सिया जाते हैं'। ऐसे प्रयोगों में जो व्यंजना व प्रभाव है वह इतना स्पष्ट है कि कोई भी आमजन सहज ही समझ सकता है कि इस मुहावरे के प्रयोग से कवि क्या समझाना चाहता है। डॉ. डागा द्वारा प्रयोग की गई मुहावरेदार भाषा का यह उदाहरण उल्लेखनीय है–

"पहले लोग सठिया जाते थे
अब कुर्सिया जाते हैं।

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-II, Issues-17, YEAR- Sept. -2020

दोस्त मेरे!
भारत एक कृषि प्रधान देश नहीं
कुर्सी प्रधान देश हैं।"[9]

बात को बदलकर कहना उनकी कविता की एक खास विशिष्टता है, जो उनकी कविताओं के संकलन 'शाकाहारी कविताएं' व 'यह कैसा मजाक है' में स्पष्ट देखी जा सकती है। मुहावरेदार भाषा का इस तरह का अनूठा चमत्कार पैदा करने वाले कवि अल्प मात्रा में ही देखे जाते हैं। उनमें डागा जी का नाम सम्मान के साथ गिनाया जा सकता है। उनकी एक कविता का तो पूरा शीर्षक ही 'पूरा सही मुहावरा' है।

डॉ. मदन डागा ने न सिर्फ पारम्परिक मुहावरों व लोकोक्तियों का प्रयोग किया है वरन् अपनी काव्य प्रतिभा के बल पर युगानुरूप नये–नये मुहावरे व लोकोक्तियाँ खुद गढ़ ली हैं, फिर भी वे लगते हैं जैसे लम्बे समय से प्रचलित हैं। उनके द्वारा गढ़े गये नये मुहावरे, जैसे– 'मजबूरन आग की भाषा बोल रहा हूँ', 'मेरी भाषा के शब्द गुरिल्लों की तरह वार करते हैं', पाठक का विशेष ध्यान आकृष्ट करते है।

शाब्दिक और मात्रिक परिवर्तनों के साथ–साथ व्याकरण के नये मुहावरों को भी डागा जी ने अपनाया है। 'वर्षा' कविता में आम आदमी के लिए इसी नयेपन का प्रयोग करते हुए उन्होंनें एक प्रभावपूर्ण बारहखड़ी तैयार की है–,

"गायब हुए स्लेट से 'अ' से अमीर
'ध' से धनी, 'म' से महाजन
लेकिन 'ग' से गरीब, 'म' से मजदूर
अभि अंकित है।"[9]

मुहावरों की तरह कविता को कहावतों के प्रयोग से प्रभावशाली बनाना भी उनकी भाषा की एक अन्यतम विशेषता है। उन्होंनें कहावतों का जिस अलग अन्दाज से अपनी कविता में समावेश किया है वह अन्यत्र दुलर्भ है। कहावतों के प्रयोग से वे अपनी आवाज को न केवल तीक्ष्ण बनाते हैं, बल्कि हथौड़े की चोट के समान वार करने लिए कविता को मजबूर कर देते हैं। इस विशेषता को लेकर चलती हुई उनकी एक प्रमुख कविता इस प्रकार है–

"गाय मार जुता दान देना एक कहावत है
मगर आदमी मार बोनस दान देना
सरकार की आदत है।"[10]

निष्कर्ष– डॉ. मदन डागा के काव्य की शिल्प–सृष्टि और भाषा–सृष्टि का समग्र रूप से विवेचन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचतें हैं कि डॉ. डागा ने अपनी कविताओं में अभिनव पद्धति के माध्यम से उत्कृष्ट भाषा का प्रयोग कर कथ्य को सम्प्रेषणीय बना दिया है। अपने अचूक व्यंग्य बाणों के माध्यम से पाठक को झकझोर देने की शक्ति से परिपूर्ण उनकी काव्य कला समस्त भाषिक विशेषताओं से मण्डित है। उन्होंनें छन्दबद्ध और छन्दरहित सभी प्रकार की रचनाओं का सर्जन किया है। उनकी भाषा में प्रभावशीलता और लयबद्धता परिलक्षित होती है। डागा जी की युग–चेतना उनके काव्य के शिल्प और भाषा के क्षेत्र में भी उसी तरह व्याप्त है जिस तरह वह उनके काव्य की सृष्टि में संग्रहित है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. मदन डागा–शाकाहारी कविताएं, इन्फोकशियस शब्द, पृ.सं.–33.
2. डॉ. प्रकाश आतुर–स्वर्गीय मदन डागा–आग की भाषा के कवि, पृ.सं.–6.
3. डॉ. मदन डागा–यह कैसा मजाक है–कुर्सी पूजक, पृ.सं.–65.
4. डॉ. सावित्री डागा (सम्पा.) डॉ. मदन डागा जीवंत यथार्थ का रचनाकार, नंद चतुर्वेदी–सामाजिक सरोकारों का कवि–मदन डागा, पृ.सं.–97.
5. हितेश व्यास–स्वर्गीय मदन डागा के मुहावरे की तलाशः मदन डागा की कविता, पृ.सं.–29.
6. डॉ. मदन डागा–आँसू का अनुवाद–पुनो, पृ.सं.–96.
7. डॉ. मदन डागा–शाकाहारी कविताएं–महाबदौलत की सदारत में, पृ.सं.–51.
8. डॉ. मदन डागा–यह कैसा मजाक है–कुर्सी प्रधान देश, पृ.सं.–17.
9. डॉ. मदन डागा–आँसू का अनुवाद–वर्षा, पृ.सं. –28.
10. डॉ. मदन डागा–यह कैसा मजाक है–गोया जिन्दगी–जिन्दगी न हो, पृ.सं.–20.

*****

PIF/6.500 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*